आर्यसमाज-स्थापना-तिथि

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ ग्रन्थ
परिग्रहण क्रमांक ... 3806
दयानन्द महिमा महाविद्यालय

वि०

दिनांक...........

(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार सम्वत् १९३१ विक्रमीय,
तदनुसार ७ अप्रैल सन् १८७५ ई०)

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
धर्माधिकारी
सार्वदेशिक धर्मार्य सभा दिल्ली

प्रकाशकः
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

आर्यों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सन् १९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी बम्बई में मनाने जा रही है। यह आयोजन बहुत विशाल और विराट् रूप का होगा और सभा अभी से इस योजना के कार्यान्वयन में लग गई है। इस आयोजन के प्रसंग का अभी प्रारम्भ ही हुआ था कि आर्यसमाज स्थापना तिथि के विषय में कुछ लोगों ने विवादात्मक लेख लिखे। यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि कई लोगों के कुछ इस प्रकार के विचार पहले से ही चले आ रहे हैं। इन सब का निराकरण यथास्थान इस लेख में आगे किया जाएगा। यहाँ पर संक्षेप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा इस विषय में किये गए प्रयत्नों का उल्लेख किया जाता है। इससे इस विषय में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

यद्यपि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही स्वीकृत कर चुकी थी फिर भी चैत्र शुक्ल पंचमी वाले पक्ष के विषय में तथ्य का निर्णय करने का प्रयत्न उसने चालू रखा था। सन् १९६४ में गुजरात प्रान्त के भड़ौच नगर में सरकार की तरफ से एक भागवत केस चला। यह केस ऐतिहासिक था। यह आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। अन्ततोगत्वा इस में आर्यसमाज की विजय हुई। सभा के अनुरोध पर इस विवाद में विशेषज्ञ साक्षी के रूप में मुझे जाना पड़ा था। मैंने जो कुछ किया और जो कुछ परिणाम उसका आर्यसमाज की विजय के रूप में निकला, आर्य जगत् को उसकी सूचना समय पर दी जा चुकी है। इसी विवाद में आर्यसमाज काकड़वाड़ी बम्बई के पुरोहित स्वर्गीय श्री पं० ऋषिमित्र जी शास्त्री मेरे निशान लगाये पुस्तकीय प्रमाणों को पुस्तक खोलकर मेरे कहने पर कोर्ट में उपस्थित करने के कार्य में सहयोगी के रूप में, अन्य कई सहयोगियों के साथ कार्य कर रहे थे। केस के दौरान मैंने

महाराज लायबल केस का वर्णन किया था। यह गुजराती में छपी पुस्तक और एक मराठी कोष के आधार पर था। परन्तु फ़ैसले की प्रति मुझे भी उपलब्ध नहीं थी। केस के समाप्त होने पर मैंने श्री शास्त्री जी को कहा कि महाराज लायबल केस के फैसले की कापी प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने यह कार्य करना स्वीकार किया। इधर सभा इस विषय में पूरा प्रयत्न करती रही कि यह कार्य हो जावे। प्रयत्न चलता रहा और परिणाम यह हुआ कि महाराज लायबल केस का फैसला प्राप्त हो गया और उस पर प्रतिक्रिया के रूप में जो दूसरी पुस्तक लिखी गई वह भी प्राप्त हो गई। दोनों ही पुस्तकें Maharaj Libel Case और Sect of Maharajas or Vallabhacharyas आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में सुरक्षित हैं। आर्यसमाज बम्बई के अधिकारियों ने उन्हें सभा को दे दिया है।

यह वही केस है जो सन् १८६२ में प्रारम्भ हुआ था और १०-१२ वर्षों तक चलता रहा। इस केस में गोस्वामी जी की असफलता ने तात्कालिक सुधारवादी जनता में एक प्रकार का विद्रोह उत्पन्न कर दिया था। ठीक उसी समय सन् १८७० ईस्वी में महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ और भाषण काशी आदि स्थानों में हो रहे थे। बम्बई के लोगों के आग्रह पर महर्षि दयानन्द १८७४ ईस्वी के अक्टूबर में बम्बई पधारे। इस काल में गोस्वामी जी के पुरस्कर्त्ता पंडितों ने शास्त्रार्थ भी किए परन्तु स्वामी जी महाराज की युक्तियों एवं तर्कों का जनता और विद्वन्मण्डली पर अमिट प्रभाव पड़ा और आर्यसमाज की स्थापना का विचार बम्बई में प्रबल हुआ।

सभा का प्रयत्न और मेरी बम्बई यात्रा

सभा ने चैत्र शुक्ल पंचमी को आर्यसमाज की स्थापना के पूर्वपक्ष को लेकर 'टाइम्स आफ इंडिया' के सन् १८७५ के रेकार्ड को देखने के

लिए पत्र-व्यवहार किया। 'टाइम्स आफ इंडिया' के सम्बद्ध अधिकारियों ने बड़ी उदारतापूर्वक इसे स्वीकार किया। दि० ७-१०-१९७१ को इन पंक्तियों का लेखक बम्बई में 'टाइम्स आफ इण्डिया' के रेकार्ड को देखने पहुंचा। साथ में सभा के मंत्री श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी भी थे। रेफ़रेन्स आफिसर ने सुविधा प्रदान की और तीन घण्टे के सहयोग से इसका प्रमाणीकरण किया और १० अप्रैल १८७५ ईस्वी शनिवार के प्रभात संस्करण के पृष्ठ ३ कालम ३ पर नीचे लिखी सूचना मुद्रित मिली—

"A meeting will be held at 5.30 P.M. today in the Girgam Back Road, in the Bunglow belonging to Dr. Maneck Ji Aderjee, when Pandit Dayanand Saraswati Swami will perform the ceremonies for the formation of Arya Samaj. All well-wishers of the cause are invited to attend."

इस यात्रा में जहाँ अन्य कार्यों के साथ इस प्रमाणीकरण का कार्य किया वहाँ मैंने तीन-चार दिन लगाकर आर्यसमाज स्थापना तिथि के विषय में आर्यसमाज काकड़वाड़ी के कागजात और शिलालेखों का पर्यवेक्षण किया। मेरे साथ इस कार्य में श्री पं० दयाशंकर जी शर्मा आर्योपदेशक बम्बई ने बड़ा ही परिश्रम किया। वे बड़े ही उद्योगी व्यक्ति हैं और तत्स्वभावानुसार ही उन्होंने सराहनीय कार्य किया। आर्यसमाज के अधिकारियों का भी सहयोग रहा। उस प्रसंग में कुछ सामग्री को देखने और प्राप्त करने का अवसर मिला जिसका विवरण निम्न प्रकार है :—

१. आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों की कार्यवाही का रजिस्टर सन् १८७८ से १८८३ तक का। इस रजिस्टर को स्वर्गीय श्री पं० ऋषिमित्र जी शास्त्री ने ढूंढ निकाला था और इसका मुझे पता था।

उनकी मृत्यु के उपरान्त यह रजिस्टर आर्यसमाज काकड़वाड़ी में नहीं था। यह आर्यसमाज के पुराने मंत्री श्री सभाजित मिश्र के पास सुरक्षित था। मेरे कहने पर उन्होंने मुझे सहर्ष यह रजिस्टर दिया और मैंने इसे सार्वदेशिक सभा में लाकर इसका फोटो कराया। ये फोटो तथा मूल रजिस्टर सभा की सम्पत्ति हैं और सभा में सुरक्षित हैं।

इस रजिस्टर के पन्नों का कागज बहुत प्राचीन हो गया है। कहीं-कहीं पर कीटदष्ट भी है। परन्तु अक्षर बहुत स्पष्ट हैं और गुजराती भाषा में हैं। इसमें सभी कार्यवाहियों में देशी तिथि, सम्वत् तथा अंग्रेजी तारीख और सन् दिए हैं। कार्यवाही के अन्त में कई पृष्ठों पर प्रा० का० उपमंत्री अथवा प्रा० का० ये हस्ताक्षर भी हैं। इसमें पैंसिल से लिखे गये २१ सितम्बर १८७९ के अंग्रेजी पत्र की प्रतिलिपि भी चस्पा है जो मंत्री आर्यसमाज लाहौर को लिखा गया था तथा आर्यसमाज के अधिकारियों का उसमें उल्लेख किया गया है। रजिस्टर में कार्यवाही की जो भाषा लिखी गई है वह बहुत ही अच्छी है और पूर्णतः उस समय की साक्षी देती है। स्वामी जी के व्याख्यान भी कार्यवाही में उल्लिखित हैं। विविध विषयों पर व्याख्यानों का भी उल्लेख है। प्रार्थना भजन करने वाले के लिए गवैया पद का प्रयोग है जो मथुरा में महर्षि के रहने और वहाँ की भाषा को ग्रहण कर प्रयोग में लाये जाने की साक्षी दे रहा है। इस रजिस्टर में ७वीं अप्रैल १८७८ से २६वीं अगस्त १८८३ ई० तक की कार्यवाहियाँ अंकित हैं।

अधिवेशन की सूचना पूर्व से पत्रों में प्रकाशित की जाती थी। ऐसा प्रत्येक कार्यवाही से प्रकट होता है। १८वीं मार्च १८८५ की कार्यवाही में "इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचम्" मंत्र का हवाला दिया गया है और मंत्र स्वरसहित सुन्दर हस्तलेख में अंकित है।

इसी रजिस्टर में चैत्र शुक्लपक्ष ७मी वार रवि संवत् १९३८ तारीख २६वीं मार्च सन् १८८२ अंग्रेजी को कार्यवाही अंकित है यह कार्यवाही नये खरीदे मकान में हुई थी। इस पूरी कार्यवाही का उल्लेख बाद में किया जाएगा। यह रजिस्टर बहुत ही उपयोगी है।

२. 'मुम्बई आर्यसमाजनो इतिहास' नाम की एक पुस्तक भी आर्यसमाज के अधिकारियों की उदारता से प्राप्त की। यह पुस्तक गुजराती भाषा में है और यह विक्रम संवत् १९८९ दयानन्दाब्द १०९, सन् १९३३ में प्रकाशित हुई थी। इसमें भी आर्यसमाज मुम्बई के रजिस्टर आदि के हवाले से उक्त आर्यसमाज का संक्षिप्त इतिहास दिया गया है।

३. आर्यसमाज मन्दिर में लगे हुए कुछ शिलालेखों का अवलोकन कर उनकी कापी स्वयं लिखी जो इस प्रकार है :—

१—क—हिन्दी अक्षरों में

भानुशालिवंशोद्भव शेठ पुरुषोत्तम भगवानदासे पोतानी स्वर्ग-वासी पत्नी शिव कुंवरबाईना स्मरणार्थे आ कुवो धर्मार्थ रु० १५०० खर्ची वंधावी आप्योछे।

सेवक लाल कृष्णदास
मंत्री—आर्यसमाज
ता० १८मी जानेवरी ई० १८९०

इसका भाषानुवाद इस प्रकार है :—

भणशाली वंश में उत्पन्न शेठ पुरुषोत्तम भगवान दास ने अपनी स्वर्गवासी पत्नी शिव कुंवर बाई के स्मृत्यर्थ इस कुवें को धर्मार्थ

रु० १५०० खर्चकर बंधवाकर दिया है।

सेवक लाल कृष्णदास
मंत्री—आ० स०
ता० १८मी जानेवरी ई० १८९०

नोट—यह कुंवा अब बन्द कर दिया गया है।

१—ख— आर्य स्थान

श्रीमत् पंडित दयानन्द सरस्वती स्वामी जी के सदोपदेश से सज्जन आर्य वैदिक जनों ने वेदानुकूल व्याख्यान और पठन-पाठनादि कार्य करने के लिए यह स्थान बना के आर्यसमाज के अधिकार में रखा है। मिति फाल्गुन सुदि १ शनिवार १९३८।

१—ग—

भानुशालि वंशोद्भव शेठ छबीलदास लल्लुभाई पोतानी स्वर्गवासी पत्नी वृज कुंवर बाईनां स्मरणार्थे यज्ञमंडपना अपूर्ण काम करवा माटे रु० २००० आप्याछे।

ता० ३० मी एप्रिल
सन् १८९०

मुम्बई
सेवक लाल कृष्णदास
मंत्री
आर्य समाज

भाषानुवाद—

भणशाली वंश में उत्पन्न शेठ छबीलदास लल्लुभाई ने अपनी स्वर्गवासी पत्नी वृज कुंवर बाई के स्मृत्यर्थ यज्ञ मंडप के अपूर्ण काम

के संपूर्ण करने के लिए रु० २००० दिया है।

ता० ३०मी एप्रिल
सन् १८९०

मुम्बई
सेवक लाल कृष्णदास
मंत्री
आर्य समाज

१—घ—

आर्यसमाज मुम्बई संवत् १९३१ स्थापित हुआ ई० सन् १८७५ चैत्र शुक्ल १ ता० ७ अप्रिल बुधवार

१—ङ—

आर्य स्थान

श्री मत्पंडित दयानन्द सरस्वती स्वामीना सदोपदेश थी सज्जन आर्य वैदिक जनो ये वेदानुकूल व्याख्यान अने पठन पाठनादि कार्य-करवाने आ आर्य स्थान बनावी आर्यसमाज ना अधिकार माँ आप्यु छे। ता० १८ फेब्रुआरी सं० १८८२।

नोट—यह शिलालेख १—ङ आर्यसमाज की छत से लगी दीवाल में है। श्री पं० दयाशंकर शर्मा ने इसको साफ कर बड़ी कठिनाई से मेरे सहयोग से पढ़ा और अंकित किया। यह शिलालेख गुजराती में है परन्तु भाव इसका वही है जो शिलालेख १—ख में है। शिलालेख १—ख की तिथि फाल्गुन सुदि १ शनिवार १९३८ है और इस गुजराती शिला-लेख की तारीख अंग्रेजी है जो तारीख १८ फेब्रुवरी सन् १८८२ है।

स्थापना तिथि संबंधी विचार

यह हुआ एक छोटे से प्रयत्न का मूल्यांकन। अब प्रस्तुत विषय पर कुछ लिखना उचित है। आर्यसमाज की स्थापना तिथि के विषय में

जो विचार पाये जाते हैं यहाँ पर सर्वप्रथम उनका उल्लेख किया जाता है। पुनः उन पर विचार किया जायेगा।

१. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् १९३१ विक्रम बुधवार ७ अप्रैल १८७५ ईस्वी को आर्यसमाज की स्थापना हुई—इस पक्ष में नीचे लिखे विचार पाये जाते हैं :—

अ—आर्यसमाज मुम्बई का शिलालेख।

आ—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली का दिनांक २७ जनवरी १९४० का निर्णय।

इ—श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा बंगला में लिखित दयानन्द चरित।

ई—बम्बई आर्यसमाज की रिपोर्ट आदि।

उ—पं० ऋषिमित्र शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज बम्बई का आर्यसमाज बम्बई के ९३वें वार्षिक महोत्सव की स्मारिका का लेख।

२. चैत्र शुक्ल पंचमी १९३१ वि० १० अप्रैल शनिवार १८७५ को आर्य समाज की स्थापना हुई। इस पक्ष में निम्न विचार पाये जाते हैं :—

(क) 'टाइम्स आफ इंडिया' के १० अप्रैल १८७५ ईस्वी के प्रभात संस्करण में प्रकाशित सूचना।

(ख) 'जामये जमशेद' और 'बाम्बे गजट' में छपी सूचना।

(ग) श्री पं० लेखराम जी द्वारा लिखित ऋषि का जीवन चरित्र।

(घ) श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक का लेख।

(ङ) ऋषि का पत्र व्यवहार जिसका उल्लेख श्री मीमांसक जी ने किया है।

इस प्रकार संक्षेप में दोनों ही पक्ष समक्ष उपस्थित हैं। प्रथम पक्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का है जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्णीत पक्ष है। अतः उसे स्थापित मान कर ही चलना श्रेयस्कर है। ऐसी स्थिति में चैत्र शुक्ल पंचमी वाले पक्ष पर ही पूर्व विचार किया जाता है। यदि यह पक्ष ठीक सिद्ध हो जाए तो स्थापित पक्ष स्वयं गिर जायेगा। यदि यही गलत सिद्ध हुआ तो उसकी स्थापना सिद्ध ही रहेगी।

चैत्र शुक्ल पंचमी वाला पक्ष अधिकांश में 'टाइम्स आफ इंडिया' आदि में छपी सूचना के आधार पर आधारित है। मैं इस लेख के पृष्ठ ३ पर उक्त सूचना को उद्धृत कर चुका हूँ और ७-१०-१९७१ को 'टाइम्स आफ इंडिया' के मेक्रो फिल्म रेकार्ड से मैं इसे प्रमाणित कर चुका हूं—यह स्पष्ट उल्लेख कर दिया है। "जामये जमशेद" और "बाम्बे गजट" देखने को नहीं मिले। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि जो सूचना "टाइम्स आफ इण्डिया" में छपी है वही इन पत्रों में भी प्रकाशित हुई। इन दोनों का भी यदि अवलोकन करने को मिल जाता तो इस सूचना की प्रामाणिकता और भी पुष्ट हो जाती। परन्तु आर्य समाज की स्थापना तिथि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। क्योंकि सूचना तो एक हो है और उसी पर चैत्र शुक्ल पंचमी का पक्ष स्थापित है।

'टाइम्स आफ इंडिया' की यह सूचना वस्तुतः आर्य समाज की स्थापना की सूचना नहीं है। इसका स्थापना-तिथि से कोई सम्बन्ध

नहीं मालूम पड़ता है। यह सूचना आर्यसमाज के प्रथम साप्ताहिक अधिवेशन की है जो शनिवार १० अप्रैल १८७५ को हुआ था। उस समय प्रार्थना समाज का अधिवेशन रविवार को प्रातःकाल होता था अतः आर्यसमाज का अधिवेशन शनिवार को किया जाता था। बाद में यह रविवार को होने लगा। परन्तु पहले शनिवार के सायंकाल को ही होता था। "Pandit Dayananda Saraswati Swami will perform the ceremonies for the formation of Arya Samaj" इस वाक्य में formation पद सामान्यतः आर्य समाज के प्रथम अधिवेशन की ही सूचना देता है। इसमें foundation की झलक नहीं मालूम पड़ती। अतः इस सूचना से केवल इतना ही सिद्ध होता है कि आर्यसमाज बम्बई का सर्वप्रथम साप्ताहिक अधिवेशन १० अप्रैल शनिवार १८७५ को हुआ और उस समय देशी तिथि चैत्र शुक्ल पंचमी सम्वत् १९३१ विक्रमीय थी। श्री देवेन्द्र बाबू ने ज्ञात होता है कि गलती से अधिवेशन की इस तिथि को ही जीवन चरित्र में स्थापना की तिथि मान लिया। स्वर्गीय पं० लेखराम जी को भी स्यात् कुछ ऐसी ही सूझ आ गई होगी।

महर्षि के द्वारा चैत्र शुक्ला ६ सम्वत् १९३१ विक्रमीय को श्री गोपाल राव हरि देशमुख को लिखे गये पत्र का जो हवाला दिया जाता है वह भी इस पूर्वोक्त साप्ताहिक अधिवेशन का ही उल्लेख करता है। उसका वाक्य निम्न प्रकार है—"आगे मुम्बई में चैत्र शुद्ध ५ शनिवार के दिन संध्या के साढ़े पांच बजते आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ।" यहां पर आरम्भ पद गुजराती लहजे को लिए हुए है। इसका अर्थ आर्यसमाज की स्थापना लेना ठीक नहीं। आर्य-समाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ का अर्थ यही है कि आर्य लोगों के समागम का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। इससे भी यही ध्वनित होता है कि अधिवेशन का आरम्भ हुआ और यही ठीक भी है।

'टाइम्स ऑफ इण्डिया' की सूचना की यह भी पुष्टि करता है। शब्दों के समझने में असावधानी कैसे होती है, इसका उदाहरण दिया जाता है :—

ऋषि ने यजुर्वेद भाष्य के प्रारम्भ में स्वनिर्मित श्लोक में लिखा है कि "ऋग्वेदस्य विधाय वै भाष्यम्" जिसका यही अर्थ साधारणतः निकलता है कि ऋग्वेद के भाष्य को 'विधाय' अर्थात् पूर्ण करके यह यजुर्वेद का भाष्य प्रारम्भ किया जा रहा है। परन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। यहां पर 'विधाय' का अर्थ प्रारम्भ करके ही लेना पड़ेगा। क्योंकि ऋग्वेद भाष्य तो महर्षि ने पूर्ण किया ही नहीं और 'यजुर्वेद भाष्य का प्रारम्भ ऋग्वेद के भाष्य के बाद किया—यह भी ठीक नहीं है। इसी प्रकार यहां आरम्भ के विषय में भी समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त इतिहास में शिलालेख से बढ़कर पत्र-व्यवहार को प्रामाणिकता प्रदान करना भी ठीक नहीं होगा।

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने आर्यसमाज बम्बई से प्राप्त एक लघु पुस्तिका का उल्लेख किया है। उसकी भी साक्षी प्रथम अधिवेशन का ही संकेत कर रही है। क्योंकि आर्य समाज काकड़-वाड़ी से मैंने एक पुस्तक प्राप्त की जिसका नाम—"मुम्बई आर्य समाजनो इतिहास" है। यह गुजराती भाषा में लिखा गया है और बहुत ही उपयोगी है। इसका उल्लेख मैंने इस लेख में पृष्ठ ५ पर किया है। इसके लेखक हैं श्री दामोदर सुन्दरदास। श्री सुन्दरदास जी उन तीन व्यक्तियों में थे जिन्होंने सर्वप्रथम १८७० ईस्वी में महर्षि का सम्पर्क किया था और महर्षि के प्रभाव में आये थे। पुस्तक के लेखक श्री दामोदर भाई उन्हीं श्री सुन्दरदास के पुत्र थे। इसमें सभी बातें ब्यौरेवार लिखी हैं। यह पुस्तक १-१०-३३ को आर्य प्रकाश मुद्रणालय, स्टेशन रोड, आनन्द में छपी थी। इस पुस्तक में पूरा ब्यौरा आर्यसमाज का दिया गया है और वह विवरण आदि पर

पूर्णतया आधारित है। इस पुस्तक के प्रथम खण्ड पूर्वार्द्ध की समाप्ति के पूर्व की पंक्तियां ९वें पृष्ठ पर निम्न प्रकार हैं—

'त्यारबाद समाज माटे जे नियमो बनाव्या हता ते तेओ ने सुधारवा माटे आप्या, तथा अेमनी सूचना मूजब ना सुधारेला नियमो तैयार थई जता संवत् १९३१ नी सालना चैत्र सुद १वे दिने प्रथम मुम्बई मा एक आर्य समाज स्वर्गवासी रा० रा० गिरधरलाल दयाल दास कोठारी बी० ए० एल० एल० बी० हाईकोर्ट ना प्लीडर ना प्रमुख पणा नीचे स्थापन थयो ॥

इसमें स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि मुम्बई में आर्य-समाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् १९३१ को श्री गिरधर लाल दयालदास कोठारी की अध्यक्षता में हुई। इस प्रमाण को काटने का कोई भी आधार नहीं है। यह वस्तुतः प्रामाणिक है।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज बम्बई के पुरोहित स्वर्गीय पं० श्री ऋषिमित्र शास्त्री ने ९३वें वार्षिक महोत्सव की स्मारिका में अपनी खोज के आधार पर मेरी प्रेरणानुसार एक लेख लिखा था। उसमें इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। वे पृष्ठ ३ पर लिखते हैं :—

इन प्राथमिक तैयारियों के पश्चात् चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, बुद्धवार ७ एप्रिल सन् १८७५ ई० व सम्वत् १९३१ विक्रमीय को मध्याह्नोत्तर सायंकाल ४ बजे वर्तमान प्रार्थना समाज के सामने, जहां राममोहन हाई स्कूल है, श्री माणिक जी की बागबाड़ी में आर्य समाज की स्थापना के लिए सभा हुई। उसके अध्यक्ष गिरधर लाल दयालदास कोठारी थे। उसी समय आर्य समाज के अधिकारियों का निर्वाचन हुआ। जिसमें उक्त सभापति महोदय को ही सर्वसम्मति से

आर्यसमाज का प्रधान चुना गया। मंत्री श्री पानाचन्द जी आनन्द पारेख चुने गए। प्रार्थना सभा का साप्ताहिक अधिवेशन रविवार प्रातः काल में होता था, अतः प्रति शनिवार के सायंकाल में आर्य-समाज का साप्ताहिक अधिवेशन होना निश्चित हुआ। तदनुसार आगामी शनिवार १० एप्रिल चैत्र शुक्ल पंचमी को आर्यसमाज का उसी स्थान में सर्वप्रथम साप्ताहिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। स्व० देवेन्द्र बाबू रचित जीवन चरित में भूल से इसे ही आर्यसमाज का स्थापना दिवस लिखा गया है। आर्य समाज के अन्तरंग सदस्यों का भी प्रतिपदा के ही दिन निर्वाचन हुआ था।"

इस उद्धरण से भी यही सिद्ध होता है कि आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् १९३१ विक्रमी तदनुसार ७ अप्रैल बुधवार १८७५ ई० को हुई थी और उसका प्रथम अधिवेशन चैत्र शुक्ला पंचमी शनिवार संवत् १९३१ विक्रमी तदनुसार १० अप्रैल शनिवार १८७५ ईस्वी को हुआ था। जो लोग चैत्र शुक्ला पंचमी को आर्यसमाज की स्थापना की तिथि मानते हैं उन्होंने वस्तुतः इसी अधिवेशन तिथि को स्थापना तिथि मान लिया है। श्री पं० इन्द्र जी की यह कल्पना भी निर्मूल है कि मन में विचार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ होगा और स्थापना चैत्र शुक्ला पंचमी को हुई होगी। जब स्पष्ट प्रमाण चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के पक्ष में मिल रहे हैं तो कल्पना करने की आवश्यकता ही क्या है ?

इस प्रकार चैत्र शुक्ल पंचमी को आर्यसमाज की स्थापना तिथि का पक्ष निर्बल है। इसमें कोई भी प्रमाण नहीं है। जो प्रमाण दिये जाते हैं उनका उल्लेख और विवेचन ऊपर किया गया और उन्हें निस्सार पाया गया। अब चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का पक्ष अपने आप सिद्ध कोटि में आ जाता है। फिर भी नई खोज से प्राप्त हुई सामग्री के आधार

पर मैं नीचे की पंक्तियों में इसे और भी पुष्ट करना अभीष्ट समझता हूं।

अकाट्य प्रमाण

मैं इसी लेख में पृष्ठ ३ पर यह उल्लेख कर चुका हूं कि मुझे एक ऐसा रजिस्टर प्राप्त हुआ है जिसमें सन् १८७८ से १८८३ ईस्वी तक के अधिवेशनों की कार्यवाही अंकित है। यह रजिस्टर बहुत उपयोगी सामग्री है और इसे सभा में सुरक्षित रखा गया है। इस रजिस्टर में अंकित नीचे लिखी कार्यवाही को प्रथम गुजराती भाषा में नागराक्षरों में लिखकर पुनः उसका भाषानुवाद कर देता हूं जिससे यह सिद्ध होगा कि आर्यसमाज की स्थापना तिथि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा है।

> चैत्र शुक्ल पक्ष ७मी वा० रवि संवत् १९३८ ता० २६मी मार्च सन् १८८२ अंग्रेजी।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष ना, वार रवि संवत् १९३८,ता० १९मी मार्च सने १८८२ अंग्रेजी अे रोज आर्यसमाज रा० रा० गोविन्द विष्णु नी शाला मां सांज ना चार वागे मल्यो हतो। प्रथम वेद मंत्रे ईश्वर स्तुति अने गवैया अे स्तुति गायन करवा बाद वर्तमान पत्र मा आपेली जाहेर खबर प्रमाणे रवि कृष्ण राम इयाराये, 'देशोन्नति' विषय पर सुरस भाषण आप्युं हतुं। **ते पछी बीजे दिवसे अेटले चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदाने वार सोम संवत् १९३८ ता० २०मी मार्च ने सने १८८२ ने रोजे आर्यसमाज नो जन्म दिवस होवा थी महोत्सव करवा मा आव्यो हतो।** ते दीवसे सवारना आठ वागे समाज ना नवा खरीद करेला मकान मां महोत्सव नो होम करवा मा आव्यो हतो, ते प्रसंगे। दक्षिणी शुक्ल·····अने गुजराती शुक्ल वगैर कैट लाक वेदरक्षक ब्राह्मणो अे त्यां पधारी, ते मांगलीक क्रिया मां सामेल थई, स्वामी जी नी आज्ञानुसार होम

क्रिया करी, होमाहुति आपी हती ते मा वेद मंत्र भणावा मां वे टुकड़ी पाडवा मां आवी हतो। एक तरफ स्वामी जीना शिष्य ब्रह्मचारी गीरानन्द जी अने बीजी तरफ थी ऊपर जाणाजेल शुक्लो आदि लई बीजा ब्राह्मणो वेद मंत्रो नो घोष करी चारों दिशा तरफ थी सर्वे साथे आज्याहुती आपता हता। अे प्रसंगे समाजिस्थो अने बीजा वहार ना घणा सुज्ञ गृहस्थो पण आ शुभ क्रिया जोवाने, अने यज्ञ नारायण ना दर्शन करवा ने पधारया हता। ते क्रिया वरोवर त्रण कलाक समी चाली हती, अने पूर्णाहुति थयावाद शुक्ल वगैरे ब्राह्मणों ने यथानुसार दक्षिणा आपी सत्कार करवा मा आव्यो हतो। ते पछी तेज दीवसे तेज स्थले सांज ना पाँच वागे महोत्सव नी सभा मली हती तेमा सुज्ञ विद्वानो, अने शेठ शाहुकारादि सज्जन गृहस्थो वीराज्याहता। अने स्वामी जी अे वेद विषय मां सुरस व्याख्यान आपी श्रोता जनो ने प्रसन्न कर्या हता। तथा तेमां श्रोता जनों ने स्पष्ट रीते दाखाव्युं हतुं के "वेद" अे सर्वविद्या ना मूल नो भंडारछे। अने ते ईश्वर प्रणीत अर्थात् ईश्वर दत्त ज्ञान छे। अेनो कर्त्ता कोई मनुष्य न थी पण अे ज्ञान नो द्रष्टा पूर्व ऋषी, मुनीओ थई गया छे। तथा अे वेद पुस्तक थी वींजूं कोई पुस्तक जूनूं आ भूगोल भरमां न थी अने अे वेद पुस्तक का वीजा कोई पण पुस्तकनुं प्रमाण के लीधेला कोई आधार के मुल देखातो न थी। तथा तेमा जे कांई दर्शावेलुं छे, तेमांनु कांई न्याय विरुद्ध के असत्य के कोई वाघो लेवा जेवुं न थी। पण जे छे ते मनुष्य मात्र ने ग्रहण करवा जेवुं छे। अेटले ते ने ईश्वर प्रणीत मानवामां कोई वाध पण आवतो न थी। अने पूर्वेथीज ऋषि मुनि आदि महात्मा ओ थी ते साधारण मनुष्य लगीना चारे वर्णना आर्य लोको ते ने ईश्वर प्रणीत मानवता आव्या छे—अेटल हवे तेने वगर कारणे अने वगर दोषे (नहीं पढ़ा जाता) अने ग्राह्य छता छोड़ी देवाय अे अज्ञानतानुं अने दुराग्रहनुं कारण कहैवाय छे, अने तेवाज पुरुषो ने मनुस्मृति

मां नास्तिक गणेला अने मानेला छे। तथा अनार्य अेवी संज्ञा आपेली छे। अेवो ते भाषणनो सारांश हतो। अे भाषण थई रह्यावाद नारों वहैंचंवा मां आव्या हता, अने पछी कलाक आठ नी सुमारे अे महोत्सव नी सभा विशरजन थई हती, ने पछी बीजी सभा चैत्र शुक्ल पक्ष ३ जेवा बुध संवत् १९३८ ता० २२ मी मार्च सने १८८२ ने रोज सांजना पांच वागे अेज स्थले फरीने मली हती अने ते दिवसे पण स्वामी जी अे वेद विषय मांज विशेष व्याख्यान आप्युंहतुं अने तेनो सारांश पण तेज सिद्धतानो हतो। अने वेद मां जे जे विद्या प्रदर्शित थयली छे, ते नुं स्पष्टीकरण करयुं हतुं। अने ते दिवसे पण रात्री ना आठ वाजे समाज विशरजन थयो हतो। अने तेमा पण आना थी सभा की माफक सर्वे सज्जन गृहस्थो वीराज्या हता।

भाषानुवाद

चैत्र शुक्ल पक्ष ७ मी वा० रवि संवत् १९३८ ता० २६ मी मार्च सन् १८८२ अंग्रेजी

फाल्गुन कृष्ण पक्ष के वार रवि संवत् १९३८, ता० १९ मी मार्च सने १८८२ अंग्रेजी—इस दिन आर्यसमाज रा० रा० गोविन्द विष्णु की शाला में सांझ को चार वजे मिला था। प्रथम वेद मंत्र से ईश्वर स्तुति और गवैया के द्वारा गायन करने के बाद वर्तमान पत्र में दी गई जाहिर खवर के अनुसार रवि कृष्ण राम ईयाराम ने देशोन्नति, विषय पर सुरस भाषण दिया था। उसके **पीछे दूसरे दिन अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा वार सोम संवत् १९४८, ता० २०मी मार्च सन् १८८२ के रोज आर्यसमाज का जन्म दिवस होने से महोत्सव करने में आया था**। उस दिन सबेरे आठ वजे समाज के नये खरीदे गये मकान में महोत्सव का होम करने में आया था। उस अवसर पर दक्षिण शुक्ल और गुजराती शुक्ल वग़ैरह कितने ही वेदरक्षक ब्राह्मणों

ने वहां पधारकर उस मांगलिक क्रिया में शामिल होकर स्वामी जी की आज्ञानुसार होम क्रिया की, होमाहुति दी, उसमें वेद मंत्र पढ़ने में दो टुकड़ी बनाने में आई थी। एक तरफ तो स्वामी जी के शिष्य ब्रह्मचारी गोरानन्द जी और दूसरी तरफ से ऊपर बताये गए शुक्ल आदि को लेकर दूसरे ब्राह्मण लोग वेद मंत्रों का घोष कर चारों दिशाओं की ओर से सभी साथ आज्याहुति दे रहे थे। इस प्रसंग पर समाजिस्थ और दूसरे बाहर के बहुत से सुज्ञ गृहस्थ भी इस शुभ क्रिया को देखने और यज्ञ नारायण का दर्शन करने के लिए आये थे, यह क्रिया लगभग तीन घण्टे तक चली थी और पूर्णाहुति हो जाने के बाद शुक्ल वगैरह ब्राह्मणों का यथानुकूल दक्षिणा देकर सत्कार करने में आया था। उसके बाद उसी दिन उसी स्थल पर सायं पांच बजे महोत्सव की सभा मिलो थी। उसमें सुज्ञ विद्वान्, और सेठ साहूकार आदि सज्जन गृहस्थ लोग विराजमान थे। तथा स्वामी जो ने—"वेद विषय" में सुरस व्याख्यान देकर श्रोताओं को प्रसन्न कर दिया था और उसमें श्रोताओं को स्पष्ट रीति से दिखा दिया था कि वेद यह सर्व विद्यावों के मूल का भण्डार है। और यह ईश्वर-प्रणीत अर्थात् ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान है। इसका कर्त्ता कोई मनुष्य नहीं, परन्तु इस ज्ञान के द्रष्टा पूर्व ऋषि मुनि लोग हो चुके हैं। तथा इस वेद की पुस्तक से प्राचोन कोई भूगोल भर में नहीं है। और इस वेद पुस्तक में दूसरो किसो पुस्तक का प्रमाण अथवा लिया गया कोई आधार अथवा मूल दृष्टिगत नहीं होता है तथा इसमें जो कुछ दिखलाया गया है उसमें कोई न्यायविरुद्ध अथवा असत्य अथवा वाधा लेने योग्य वस्तु नहीं है। वल्कि जो है वह मनुष्य मात्र के द्वारा ग्रहण करने योग्य है। इसलिए इसे ईश्वरप्रणीत मानने में कोई वाधा भी नहीं आती और पूर्व से ही ऋषि मुनि आदि महात्माओं से लेकर साधारण मनुष्य तक, चार वर्ण के आर्य लोग

इसको ईश्वर प्रणीत मानते आए हैं। इसलिए अब उसे विना कारण और बिना दोष (वहां पर मूल में दो शब्द पढ़ने में नहीं आए) और ग्राह्य होने पर छोड़ देना—यह अज्ञानता और दुराग्रह का कारण कहा जा सकता है और इन्हीं हो पुरुषों को मनुस्मृति में नास्तिक गिना और माना गया है और उन्हें अनार्य—ऐसी संज्ञा दी गई है।

यह उनके (स्वामी जी के) भाषण का सारांश था। इस भाषण के हो जाने के बाद नारे लगाये गये। बाद में घण्टा लगभग आठ बजे महोत्सव की सभा समाप्त हुई थी। उसके बाद दूसरी सभा चैत्र शुक्ल पक्ष ३ बुधवार संवत् १९३८, ता० २२ मी मार्च सन् १८८२ के रोज सायं पांच बजे इसी स्थल पर फिर से मिली थी और तब भी स्वामी जी ने वेद विषय में ही विशेष व्याख्यान दिया था और उसका सारांश भी उसी प्रकार की सिद्धि का था और ये जो विद्या प्रदर्शित है उसका स्पष्टीकरण किया था। और उस दिन भी रात्रि के आठ बजे समाज का विसर्जन हुआ था और उसमें भी इससे पूर्व सभा की माफिक सब सज्जन गृहस्थ उपस्थित थे।

इस कार्यवाही में स्पष्ट हो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्यसमाज का जन्म दिवस बतलाया गया है और उस दिन यज्ञ आदि महोत्सव किया गया और महर्षि का वेद पर भाषण हुआ—यह भी दर्शाया गया है। इससे बढ़कर और अकाटय प्रमाण क्या हो सकता है ?

इसलिए यह निश्चित और सिद्ध है कि आर्यसमाज की स्थापना तिथि वही हैं जिसका निर्णय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने किया है और वह है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् १९३१ विक्रम, बुधवार ७ अप्रैल १८७५ ई०। आर्यसमाज का प्रथम अधिवेशन चैत्र

शुक्ल पंचमी संवत् १६३१ शनिवार १० अप्रैल सन् १८७५ को हुआ था।

इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही आर्यसमाज की स्थापना तिथि है चैत्र शुक्ल पंचमी नहीं।

वैद्यनाथ शास्त्री
धर्माधिकारी
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली

नोट—आर्यसमाज की रजिस्ट्री का काग़ज़ भी मुझे प्राप्त हुआ और उसको मैंने देखा। यह १३ अप्रैल सन् १८८८ को मध्याह्न में २ बजकर ५५ मिनट पर प्रस्तुत किया गया था। इसके आधार पर कुछ लोगों ने कहा कि आर्यसमाज बम्बई की स्थापना की अंग्रेजी तारीख ७ मार्च सन् १८७५ बनती है। परन्तु सूक्ष्मता से देखने पर ज्ञात हुआ कि उस तारीख को जो बैठक महर्षि की अध्यक्षता में हुई थी वह नियमों की रचना के विषय में हुई थी। इस तारीख को आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी। अतः इस तारीख को आयसमाज की स्थापना की तारीख कहना गलत है।

गुरु विरजानन्द
सन्दर्भ पु
पु परिग्रहण क्रमांक
दयानन्द महिला म
3806

सत्साहित्य केन्द्र प्रिंटर्स, १७३-डी, कमलानगर, दिल्ली-७ (फोन—२२२२४०)